IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

लोकधर्मी जनकवि श्री रामस्वरूप लाल 'मंगल' के द्वारा रचे गए गीतों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन

सरिता श्रीवास्तव[1] and *डॉ मंजू श्रीवास्तव*[2]

शोध छात्र, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. भारत [1]

असिस्टेंट प्रोफेसर, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. भारत[2]

सार

लोक साहित्य लोक में सर्वदा से समृद्धि रहा है। इसकी भूरि भूरि प्रशंसा चत्र-यत्र ही नहीं, भोजपुरी इतिहास समाज में सभी जगह प्रतिस्थापित है। इसके बड़े-बड़े उच्च रचनाकार लेखक हुए जिनकी धवल कीर्ति देश के इतिहास पटल पर अंकित है। उनकी यश पलाका अम्बर में बहुत दिनों से और आज भी छाई हुई है। सम्भवतः उनका नाम उनका यश सर्वदा इस धरती पर विद्यमान रहेगा। उन्हीं रचनाकारों में एक नाम है लोकधर्मी कवि श्री रामस्वरूप लाल 'मंगल' का जो सुकवि ही नहीं, सच्चे सन्त, एवं लोक विधाओं के पथ-प्रदर्शक रहे।

इनकी रचनाएँ साधारण से उच्चकोटि तक हुई। उसमें इन्होंने जो भाव शब्दों का समावेश अलंकार छन्द आदि जो सजाया है, वह देश के लोक साहित्य के बड़े बड़े रचनाकारों में भी विद्यमान है। ये बहुत कम उम्र से ही रचना करना आरम्भ कर दिए थे। ये नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। आरम्भ से ही ये भोजपुरी साहित्य में धार्मिक गीतों को रचकर लोक मंगल करते रहे। सम्भवतः ये हिन्दी साहित्य की सारी विधाओं के मर्मज्ञ रचनाकार थे।लोभ लाभ लालच से इन्होंने कभी भी रचना नहीं किया। मंच माइक माला की इनको कभी भी हृदय से चाहत नहीं रही।

आज भी सारा समाज प्रान्त देश इन्हें एक सन्त ही समझता है। इनके बहुत शिष्य उनके गीतों को गा-गा कर अपना जीवन यापन अच्छे ढंग से कर रहे हैं। मंगल मुन्शी जी के जीवन के विषय में क्या कहा जाए? इन्होंने अपने जीवन को एक सच्चे फकीर की तरह बिताया। अपना कागज, अपनी कलम, अपने स्याही से गीत लिखकर ये गायकों को जीवन भर देते रहे। इनके उपनाम 'मंगल' को कौन नहीं जानता? बड़े-बड़े उच्च कवियों में इनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है। मुन्शी जी को इनकी रचनाओं से बड़ा सम्मान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल सका। मंगल मुन्शी जी की काव्यागत शैली अद्वितीय रही। इन्होंने भोजपुरी लोकगीतों की धर्मिता को एक नया आयाम दिया है। इन्होंने भोजपुरी एवं खड़ी हिन्दी की जो सुन्दर परिपाटी विकसित की है उसकी सुगन्ध आज देश के चारों ओर बिखरी हुई है। इस शोध में सभी सूचनाएं पुस्तकालय,इन्टरनेट,समाचार एवं पत्र-पत्रिकाएं और सम्मलेन सभागार आदि से प्राप्त किया गया है |यह आंचलिक भाषा और कवि और उनकी कविता में उनके योगदान में प्रकाशित करता है |

मुख्य बिंदु : *आंचलिक, राष्ट्रभक्ति, मंगल, जीवन, गज़लआदि*

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. Zee Ganga (2016) zeegangaofficial
2. https://www.facebook.com/KGMMirzapur/videos/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B50
3. https://www.bhaskar.com/local/chhattisgarh/bastar/jagdalpur/news/tricolor-march-was-taken-out-said-hoist-the-national-flag-in-every-house-130185248.html
4. https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/navchetana